

13. करुणापरा हि साधवः

‘जातकमाला’ एक कथाग्रन्थ है जिसमें ‘बोधिसत्त्व’ नाम से प्रसिद्ध महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों पर आधारित प्रेरणाप्रद कथाएं संकलित हैं। इस पाठ के अंतर्गत यही बताया गया है कि ऐश्वर्य और अधिकार सम्पन्न होकर भी महात्मा लोग कभी भी सम्पन्नता या विपन्नता की स्थिति में विचलित नहीं होते। बोधिसत्त्व करुणा, परोपकार आदि गुणों से सम्पन्न देवताओं के राजा शक्र हुए। उन्होंने अपने ऊपर भयानक विपत्ति की आशंका में भी अपने जीवन की रक्षा की परवाह न करते हुए ‘गरुड़’ पक्षी के घोंसलों में स्थित बच्चों की रक्षा को अधिक महत्त्व दिया। ऐसा करुणापूर्ण हृदय महापुरुषों का ही होता है। आज भी हम यदि जीवों पर दया करना सीख जाएं तो देश या विश्व में पर्यावरण की समस्या ही न रहे और न ही व्यर्थ में आतंकवाद फैले।

| | | | |
|------------------------------|----------------------------------|--|------------------------------------|
| कर्तृपदचयनम् तदनुसृत्य | — क्रियापदचयनम् | मातलिः (मातलि ने) इन्द्र — न्यवर्तयत् (लौटाया) | |
| बोधिसत्त्वः | — अभवत् (हुए) | का सारथि) | |
| राजलक्ष्मीः | — अराजत (सुशोभित हुई) | शक्रः | — पश्यति (देखता है) |
| लक्ष्मीः (लक्ष्मी ने) | — अकरोत् (किया) | खगालयाः (घोंसले) | — पतेयुः (गिरें) |
| ते (उन सबने) | — आक्रान्तवन्तः (आक्रमण कर दिया) | दैत्याः | — समभियान्ति (सामने आ रहे हैं) |
| शक्रः (इन्द्र) | — अभवत् (हुए) | राक्षसवाहिनी | — अभिधावति (सामने दौड़ती आ रही है) |
| महासत्त्वः | — अभ्यगच्छत् (सामने आ गया) | शक्रः | — उवाच (बोला) |
| सुरेन्द्रवाहिनी (देवसेना ने) | — अकरोत् (किया) | मातलिः | — निवर्तितवान् (लौटाया) |
| सुरेंद्रः | — अतिष्ठत् (ठहरा)। | शक्रः | — अगच्छत् (गया) |

कथाबिन्दवः:

- बोधिसत्त्वः ऐश्वर्यसम्पन्नः, करुणापरः देवानाम् अधिपः शक्रः अभवत्।
- एकदा तस्य समृद्धिं प्रति ईर्ष्यालवः दैत्याः तम् प्रति आक्रान्तवन्तः।
- युद्धे देवसेना पलायिता, देवेंद्रः, शक्रः अपि मातलिसारथिना सह युद्धक्षेत्रात् अभिधावति।
- शक्रः मार्गे अग्रे शाल्मलीतरौ गरुडनीडानि पश्यति।
- शक्रः गरुडनीडानि रक्षितुं मातलिम् आदिशत्।
- मातलिः गरुडनीडानां रक्षणापेक्षया आत्मरक्षणं वरं मन्यते।
- परं करुणापरः शक्रः आत्मरक्षणापेक्षया जीवरक्षणं वरं मन्यते।
- शक्रस्य निर्देशानुसारं मातलिः रथं पृष्ठे न्यवर्तयत्।
- ततः अभिधावन्ती दैत्यसेना शक्रस्य अधिकपराक्रमस्य आशङ्किता शक्रं प्रति प्रणतिं गता।
- एवं हि दयातोः शक्रस्य जयः अभवत्।

विशेषण-विशेष्यपदानि

| | | | | | |
|-------------------|---|-----------|--------------------------|---|-----------------|
| (i) दर्पमलिनम् | — | हृदयम् | (viii) विषदिग्धेभ्यः | — | शस्त्रेभ्यः |
| (ii) व्याप्ताम् | — | कीर्तिम् | (ix) भीता | — | सुरेन्द्रवाहिनी |
| (iii) अत्यदभुताम् | — | लक्ष्मीं | (x) समुत्पत्ततः | — | रथस्य |
| (iv) ईर्ष्यालवः | — | दैत्यगणाः | (xi) आगतानि | — | गरुडनीडानि |
| (v) शान्तिप्रियः | — | शक्रः | (xii) एते | — | खगालयाः |
| (vi) सध्वजं | — | हैमरथम् | (xiii) दानसंयमकरुणादिभिः | — | गुणैः |
| (vii) स्फुटितम् | — | नभस्तलम् | | | |

पाठे प्रयुक्तानि ‘क्त’ प्रत्ययान्तपदानि = विशेषणपदानि/क्रियापदानि च

| | | | |
|--------------------------|--|-------------------|----------------------------------|
| अलङ्कृतः— सुशोभितः | = अलम्+कृ+क्त (पुं.) | परिवृतः— घिरा हुआ | = परि+वृ+क्त (पुं.) |
| समन्विता — युक्त | = सम्+अनु+इ+क्त (स्त्री) | प्रारब्ध | = प्र+आ+रभ्+क्त (पुं.) |
| व्याप्ताम् — फैली हुई को | = वि+आप्+क्त (स्त्री) | भीता | = भी+क्त (स्त्री) |
| जाताः — हो गए | = जन्+क्त (पुं.) | युक्ता | = युक्त, साथ |
| सुसज्जितः — तैयार | = सु+सज्ज्+क्त (पुं.) | गताः | = हो गए, गए हुए = गम्+क्त (पुं.) |
| आपन्नः — प्राप्त हुए | = आ+पद्+क्त (पुं.) | | |
| क्तवतु — आक्रान्तवन्तः | — आक्रमण कर दिया = आ+क्रम्+क्तवतु (पुं.) | | |

प्रश्नाः

1. अधोलिखित-अव्ययानि वाक्येषु प्रयोगं कुरुत

एकदा, यावत्-तावत्, एव, इतः, ततः, अग्रे, अधः
इदानीम्, धिक्, इव, तथा, तदा।

यथा— (i) यावत् वृष्टिः भवति तावत् त्वम् अत्रैव तिष्ठ।

2. मैलनं कुरुत

| अ | ब |
|----------------|----------------|
| (i) व्याप्ताम् | (क) रणः |
| (ii) प्रारब्धः | (ख) देवेन्द्रः |
| (iii) भीता | (ग) कीर्तिम् |
| (iv) अलङ्कृतः | (घ) वृक्षः |
| (v) परिवृतः | (ङ) देवसेना |

3. अधोलिखितानि वाक्यानि कथाक्रमेण लेखनीयानि।

- (i) शक्रः मातलि गरुडनीडानि रक्षितुं कथयति।
- (ii) शक्रे प्रतिनिवृते सति असुरसेना तस्य अधि कपराक्रमम् आशङ्कमाना शक्रं प्रति शरणं गताः।
- (iii) शक्रः अग्रे गच्छन् गरुडनीडानि पश्यति।
- (iv) एकदा बोधिसत्त्वः करुणापरः देवानाम् अधिपः शक्रः अभवत्।
- (v) ते शक्रं महता सैन्यबलेन आक्रान्तवन्तः।
- (vi) मातलिः गरुडनीडानां रक्षणात् आत्मरक्षणं वरं मन्यते।
- (vii) दैत्यगणाः तस्य कीर्ति लक्ष्मीं च असहमानाः ईर्ष्यालवः जाताः।
- (viii) परस्परं युध्यमानेषु देवसेना पलायनम् अकरोत्।
- (ix) समुद्रतीरान्ते देव-दैत्यसेनयोः मध्ये रणः प्रारब्धः।
- (x) परं शक्रः आत्मरक्षणात् जीवरक्षणं वरं मन्यते।